# 'प्रथम सम्मलेन' को सफल बनाओ!

## सेमिनार : 'गहराता फ़ासीवादी अंधेरा और हमारा फ़र्ज़'

## 'सावित्रीबाई-फ़ातिमा शेख़ स्मारक मज़दूर पुस्तकालय' का उद्घाटन

**क्रांतिकारी मज़दूर मोर्चा, फ़रीदाबाद**

**सा**थियों, मोदी सरकार, हर मोर्चे पर पूरी तरह नाकाम रही है। पिछले 9 साल, देश के इतिहास में, एक काले धब्बे की तरह नमूद होंगे। टुकड़खोर, दरबारी मीडिया द्वारा फैलाए झूठ के गुबार द्वारा, योजनाबद्ध तरीके से फैलाई मज़हबी ख़ुमारी और अंधराष्ट्रवाद के नशे का शिकार होकर, 2014 और 2019 में जिन लोगों ने झूमकर, मोदी को वोट दिए थे, उनकी भी आंखें खुल चुकी हैं। वे सब आज ठगा हुआ महसूस कर रहे हैं। रसीले चुनावी वादे, 'अच्छे दिन' की बात तो भूल जाईये, मोदी सरकार, जिस नंगई से, देश के सारे खनिज-संसाधन, सरकारी इदारे, रेल, सड़क, हवाई अड्डे, बंदरगाह, सब कुछ, देश के चुनिंदा कॉर्पोरेट लुटेरों, अडानी-अम्बानियों को समर्पित करती जा रही है, वैसा पहले कभी नहीं हुआ। युवाओं को हर साल 2 करोड़ रोज़गार देने का वादा कर ठगने वाले प्रधानमंत्री को, उनका वादा याद दिलाने वालों को, मोदी सरकार देशद्रोही कहकर जेलों में डाल रही है!!

सबसे घातक हमला, मोदी सरकार ने, मज़दूरों पर बोला है। कारखानेदार, सब श्रम क़ानूनों से आज़ाद कर दिए गए हैं। श्रम क़ानून लागू कराने वाले, सभी सरकारी इदारों को, मोदी सरकार ने ठप्प करके रख दिया है। 'मालिकों को मनमानी करने दो', यही है मोदी जी 'व्यवसाय की सुगमता'!! मालिक, मज़दूरों का पीएफ, ईएसआई डकारने के लिए आज़ाद ह। मोदी के इस 'अमृत काल' में मज़दूर मरने के लिए आज़ाद हैं। 80 प्रतिशत मालिक, ईएसआईसी की, मज़दूर से वसूली गई कटौती भी जमा नहीं कर रहे। दुर्घटना होने के बाद कार्ड बनाया जाता है। लेबर कोड लागू नहीं, लेकिन उससे कहीं अधिक ज़ुल्म-ज़्यादती उन्हें आज झेलनी पड़ रही है।

समाज का लम्पट, गुंडा तत्व, गले में भगवा गमछा डाले, हथियार लहराते, जगह-जगह नज़र आने लगा है। हिन्दुओं के स्वयंभू ठेकेदार, 'हिन्दू धर्म ख़तरे में है', 'महिलाएं असुरक्षित हैं', 'ये सब मुसलमानों की वजह से है', दिन-रात, ये पाठ पढ़ाने में लगे हैं। इन टोलियों को पुलिस-प्रशासन का संरक्षण प्राप्त है। मंहगाई का ये हाल है कि गैस सिलिंडर 1150 रु, आटा 40 रु किलो, दाल 200 रु किलो, तेल 250 रु किलो है। देश का तिहाई युवा बेरोज़गार है। दूध और फल तो छोडिए, लोग (हिन्दुओं समेत) सब्जियां ख़रीदने लायक़ भी नहीं बचे। इतनी बेरोज़गारी और मंहगाई कभी नहीं रही। अल्पसंख्यकों के प्रति ज़हर उगलने वाले, 'जय श्रीराम' के नारे लगाते, ये भगवा गमछाधारी, मंहगाई, बेरोज़गारी पर कभी क्यों नहीं बोलते? क्या ये मुद्दे हिन्दुओं को प्रभावित नहीं करते?

कोई भी बलात्कारी, लम्पट गुंडा, अगर चुनाव में भाजपा के किसी काम आ सकता है, तो वह कितनी भी गुंडई करे, कितना भी नंगा नाच करे, भाजपा को फ़र्क नहीं पड़ता। गुंडा-बलात्कारी-हत्यारा, अगर भाजपाई है, तो वह संस्कारी है!! बड़े से बड़ा भ्रष्टाचारी, गले में भाजपा का पट्टा डालते ही संत कैसे हो जाता है? देश के 85 करोड़ लोग कंगाली के उस स्तर पर पहुंच गए, कि सरकारी खैरात की ज़िल्लत झेलने को मज़बूर हैं? भूख सूचकांक में

भारत, सोमालिया के नज़दीक 107 वें नंबर पर पहुंच गया। एक तरफ़ है, कंगाली का महासागर और दूसरी तरफ़ चंद 'सरकारी' कॉर्पोरेट, अडानी-अम्बानियों की दौलत के विशाल पहाड़। 9 साल के मोदी काल में, खरबपतियों की दौलत 10 गुना बढ़ गई। लोगों के जीवन-मरण के मुद्दों से मोदी सरकार डरती है। समाज को बांटने वाले बेहूदा वाहयत मुद्दे, खोजना, उन्हें लागू कराने के लिए, अंध भक्तों की फौज तैयार करना, सरकार का सर्वप्रथम एजेंडा है। मोदी सरकार ऐसा क्यों कर रही है, किस के हित में कर रही है, मेहनतकश अवाम को क्यों बांटना चाहती है, हमारा फ़र्ज़ क्या है, इन गंभीर सवालों पर गंभीर विचार-मंथन करना हमारी ज़िम्मेदारी है।

'धरमवार फ़साद ते ओन्हादे इलाज', जून 1927 में 'किरती' में छपे, अपने पंजाबी निबंध में, शहीद-ए-आज़म भगतसिंह लिखते हैं; "लोगों को आपस में लड़ने से रोकने के लिए वर्ग-चेतना महत्वपूर्ण है। ग़रीब मज़दूरों और किसानों को यह स्पष्ट रूप से समझाना होगा कि उनके असली दुश्मन पूंजीपति हैं, इसलिए उन्हें सावधान रहना चाहिए, वे उनके जाल में न फंसें। दुनिया के सभी गरीब लोगों को, उनकी जाति, नस्ल, धर्म या राष्ट्र कुछ भी हो, समान अधिकार हैं. यह आपके हित में है कि धर्म, रंग, नस्ल और राष्ट्रीयता के आधार पर सभी भेदभाव समाप्त करते हुए, राज-सत्ता अपने हाथ में ले लें। ऐसा करने से आपको किसी भी तरह का नुकसान नहीं होगा, बल्कि एक दिन आपकी बेड़ियां कट जाएंगी और आपको असली आर्थिक आजादी मिल जाएगी।"

पूंजीवाद की मुद्दत पूरी हो जाने के बाद भी, क्रांतिकारी शक्तियां, उसे उखाड़कर नहीं फेंक पाईं, परिणामस्वरूप ये सड़ने लगा है। व्यवस्था ऐसे संकट में फंस चुकी है, जिससे निकलने का हर उपाय उसे और गहरे गड्ढे में धकेल दे रहा है। अपनी अवश्यम्भावी मौत के डर से, अब वह, फूट डालकर, पूरे समाज को आत्मघाती, ख़ूनी जंग में झोंक दे रहा है। समाज के कंगालीकरण के साथ-साथ, नशाखोरी, सांस्कृतिक सड़न, अश्लीलता और नैतिक पतन की सड़ांध चरम पर है। पूंजीवादी पतन के, इस बेहद हिंसक और षडयंत्रकारी स्वरूप को, फ़ासीवाद कहते हैं। जनवाद के सभी इदारे खोखले और निष्प्राण हो चुके। मुस्लिम समाज को ज़ेहादी-आतंकी बोलकर दुश्मन बताने और अंधराष्ट्रवाद का झूठा बवंडर खड़ा करने के पीछे, इनका असल अजेंडा है; भयंकर कंगाली, अभूतपूर्व बेरोज़गारी और बे-इन्तेहा मंहगाई में पिसते जा रहे, और परिणामस्वरूप गोलबंद होते जा रहे, मज़दूरों और मेहनतक़श किसानों की एकता को खंडित करना और उन्हें मज़हबी ज़हालत की अंधेरी कोठरी में धकेलकर, सारा देश, अडानी-अम्बानियों को अर्पित कर देना। फ़ासीवादी अंधेरा गहराता जा रहा है। मार्टिन निमोलर की वह कालजयी सीख हमारे सामने है। ये 'इंडियन नाज़ी', एक-एक कर, हर तबक़े को निशाने पर लेने वाले हैं। इस ख़ूनी तमाशे को चुपचाप बैठकर देखना या आँखें फेर लेना, अक्षम्य अपराध होगा। फ़ासीवाद, चूंकि सड़ता हुआ पूंजीवाद है, इसलिए पूंजी के राज को समूल नष्ट किए बगैर, फ़ासीवाद से मुक्ति संभव नहीं।

**'क्रांतिकारी मज़दूर मोर्चा' का एक साल का सफ़र**

एक दलित, विधवा महिला मज़दूर की 11 वर्षीय मासूम गुड़िया, पिछले साल, 11/12 अगस्त की रात, आज़ाद नगर, मज़दूर बस्ती में सार्वजनिक शौचालय ना होने की वज़ह से शौच के लिए, रेल पटरियों के किनारे गई और वहशी दरिंदगी की शिकार हुई। 12,000 लोगों की पूरी मज़दूर बस्ती गुस्से में उबल पड़ी। मज़दूर-विरोधी तंत्र के विरुद्ध, मज़दूर-आक्रोश धधकने लगा। 'बहुत हुआ, हमारी बच्चियों की ऐसी लाशें हम नहीं देख सकते', 'कुछ करो', लोगों की चीखें तीव्र होती देख, कुछ मज़दूर संगठनों ने सभा की। छुट्टियों के चलते, डीसी कार्यालय पर आक्रोश प्रदर्शन के लिए 16 अगस्त की तारीख तय हुई। उससे पहली रात चले, पुलिस-प्रशासन के दमन-चक्र को देखकर, वे मज़दूर संगठन रंग बदल गए। मज़दूरों की भावनाओं से खिलवाड़ करना, उनसे गद्दारी करना, हमें मंज़ूर नहीं था। हम तय कार्यक्रम पर अटल रहे। आगे-पीछे हथियार-बंद पुलिस के बीच, 'देख लेंगे' के अंदाज़ में पुलिस द्वारा, मोबाइल से, लगातार फोटो लेते रहने, ऑटो चालकों को धमकाकर हमें ना बिठाने से रोकने के बावजूद, मज़दूरों ने पुलिस से, डरने से मना कर दिया। मज़दूर-आक्रोश की उसी ऊर्जा से, फ़रीदाबाद में, 'क्रांतिकारी मज़दूर मोर्चा' नाम के एक नए संगठन का अंकुर फूटा था।

मात्र दो लोगों की, जज़्बाती-ज़िद्दी टीम के वे तेवर, मज़दूरों को ना सिर्फ़ याद रहे, बल्कि उन्होंने उनका बहुत सम्मान किया, प्यार दिया। आज़ाद नगर की 'गुड़िया' का वह लहुलुहान चेहरा, हम ना भूले हैं, ना भूलेंगे। बिरादराना संगठनों के, उपहासपूर्ण बर्ताव और शुभचिंतकों के भेष में घूम रहे अशुभचिंतकों के तक़लीफ़देह बर्ताव के बावजूद, पूरे साल में, ऐसा एक दिन नहीं गुजरा, जब 'क्रांतिकारी मज़दूर मोर्चा' एक क़दम आगे ना बढ़ा हो, उसे मज़दूरों का प्यार ना मिला हो। भले आज ये उपलब्धि बहुत छोटी लगे, लेकिन सदमे से टूट चुकी बहादुर, दलित महिला मज़दूर को आर्थिक मदद दिलाना, पुराने शौचालय को ठीक कराना, नए शौचालय का निर्माण-कार्य शुरू कराना और टैंकर से ख़रीदकर पानी पीने वाली तथाकथित अवैध बस्ती में, नगर निगम द्वारा नियमित जल-आपूर्ति सुनिश्चित कराना, आसान काम नहीं था।

काम की आवाज़, ज़ुबान की आवाज़ से ज्यादा दूर तक जाती है, कहीं ज्यादा असरदार होती है। ख़ुशी, दिल को अंदर तक छू जाती है, जब औद्योगिक नगरी फ़रीदाबाद के मज़दूर और उनसे प्रतिबद्धता रखने वाले लोग कहते हैं; 'आप लोग बाक़ी मज़दूर संगठनों जैसे नहीं हैं'। हमें, ख़ुद को साबित करने का अवसर दिया, लखानी के बहादुर मज़दूरों न। विश्वास नहीं हुआ था, जब लखानी के मज़दूरों ने बताया, कि दस-दस साल की नौकरी के बाद, मालिक ने, उनसे, यह कहकर इस्तीफे लिखवा लिए कि 'साइन करो, तुम्हारे सारे हिसाब का चेक मिल जाएगा'। दो साल से चक्कर काट रहे मज़दूर, जिन्हें छुट्टियों के पैसे, बोनस, ग्रेच्युटी कुछ नहीं मिला था, दो साल से पीएफ़, ईएसआईसी जमा नहीं हुआ था, मायूसी में पूरी तरह टूट चुके थे। लखानी या उसका कोई नौकर, लेबर कोर्ट के बुलावे पर भी नहीं जाता था। 'हमने आज तक किसी मोर्चे को अपनी कंपनी में नहीं घुसने दिया, ये 'क्रांतिकारी मज़दूर मोर्चा' कहां से पैदा हो गया', लखानी के बाउंसर-टाइप महाप्रबंधक ने, यह भभकी, हमें श्रम-अधिकारी के चैम्बर में दी थी। आज केसी लखानी ख़ुद, पीएफ़ के फ़रीदाबाद और दिल्ली कार्यालयों में चक्कर काट रहा है, 'पैसे जमा करने के लिए , एक महीने का वक़्त दे दो, पुलिस कार्यवाही रोक दो'। वह लिखकर दे चुका है कि मज़दूरों का एक-एक पैसा देंगे। यहां तक कि, हताशा में, संगठन को तोड़ने के आख़िरी प्रयास के तहत, उन मज़दूरों को चेक देने शुरू कर दिए हैं, जो हमारे संगठन के सदस्य नहीं हैं।

पूंजी के कोल्हू से, मेहनतक़श वर्ग की मुक्ति, समाजवादी क्रांति की मंज़िल फ़तह किए बगैर, मुमकिन नहीं; हमें मालूम है. हम अपनी सीमाओं से भी बे-ख़बर नहीं हैं. हमारा वजूद, अभी फ़रीदाबाद तक ही सीमित है. संगठन के विस्तार के बारे में हमारा मानना है, कि दरख़्त की ही तरह, संगठन का, किसी एक जगह ज़मीनी आधार, अगर मज़बूत नहीं है, तो विस्तार, उसकी सेहत के लिए घातक होता है. राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, औद्योगिक सर्वहारा का देश में सबसे बड़ा गढ़ है. गुड़गांव, मानेसर, धारूहेड़ा, भिवाड़ी, बहादुरगढ़, सोनीपत, कुंडली, दिल्ली, गाज़ियाबाद, नोएडा, फ़रीदाबाद मिलकर भारतीय 'पेत्रोग्राद' बनने की संभावनाएं रखते हैं. आगामी वर्ष में हम, अपनी सामर्थ्यानुसार, इस क्षेत्र में विस्तार के प्रयास करेंगे. जैसा हमने शुरू में ही प्रस्तावित किया है, मज़दूर वर्ग के ईमानदार संगठनों से, साझी तहरीक़ चलाने के प्रयास, शिद्दत से ज़ारी रहेंगे.

देश में, क्रांतिकारी पार्टी का मौजूद ना होना, क्रांतिकारी सर्वहारा वर्ग का हौसला पस्त करने वाली, एक क्रूर हक़ीक़त है. इस बोझ को उठाने में हम अकेले, ख़ुद को असमर्थ पाते हैं, लेकिन उस दिशा में किसी भी ईमानदार प्रयास का पूरी ताक़त से साथ देंगे. मज़दूरों को, उनकी दैनंदिन, जीवन-मरण की समस्याओं पर संगठित करना, उन्हें शरणागत या ख़ुशामदी होने की बजाए, लड़ने के लिए प्रेरित करना, एक-दूसरे के दर्द को शिद्दत से महसूस करते हुए, वर्ग-चेतना जागृत करना और राजनीतिक रूप से सचेत, क्रांति के योद्धा तैयार करने की अपनी मूल राजनीतिक लाइन पर, हम अपनी आख़री साँस तक लड़ते रहेंगे. जातिगत उत्पीड़न-दमन और समाज में गहरे तक पैठ चुके, जाति-कोढ़ के मसलों पर, तीखा, समझौतारहित प्रतिकार आंदोलन चलाने और जाति-उन्मूलन को गंभीरता से लेने के लिए, हमारा संगठन, अपने जन्म से ही प्रतिबद्ध है. इस जन-संगठन का तो जन्म ही दलित, मज़दूर महिला परिवार पर हुई, बे-इन्तेहा हैवानियत के विरुद्ध, उठे जन-आक्रोश की ऊर्जा से हुआ है. अल्पसंख्यक मुस्लिम समाज की परीक्षा की इस घड़ी में, हम हमेशा उनके साथ खड़े नज़र आएँगे. साथ ही, महिलाओं के पित्रसत्तात्मक दमन और आदिवासियों के जंगल-ज़मीनों की कॉर्पोरेट लूट के ख़िलाफ़, पीड़ित समाज को लामबंद करते हुए, उसे मुक्ति की प्रमुख लड़ाई से जोड़ने के अहद को, हम एक बार फिर दोहराते हैं. मज़दूरों को, अपनी मुक्ति की जंग जीतने के साथ, पूरे समाज को, घिनौने फ़ासीवादी अँधेरे से मुक्त कराना है. मज़दूरों के अलावा, ये जंग कोई नहीं जीत सकता.

जन-संगठन, 'क्रांतिकारी मज़दूर मोर्चा' का अंकुर 11/12 अगस्त को फूटा, 16 अगस्त को डीसी कार्यालय पर हुए शानदार आक्रोश-मार्च से उसका सफ़र शुरू हुआ, लेकिन एक पृष्ठ के घोषणा-पत्र के साथ, उसकी नेतृत्वकारी सांगठनिक टीम का विधिवत गठन, पिछले साल, शहीद-ए-आज़म भगतसिंह के जन्म-दिन, 28 सितम्बर को हुआ था. मार्क्सवाद-लेनिनवाद हमारा मार्ग-दर्शक सिद्धांत-दर्शन तथा शहीद-ए-आज़म भगतसिंह के क्रांतिकारी विचार और उनका किरदार, हमेशा हमारे प्रेरणा स्रोत बने रहेंगे.

एक वर्ष पूरा होने पर, हमारे पहले वार्षिक सम्मलेन तथा 'गहराता फ़ासीवादी अंधेरा और हमारा फ़र्ज़' विषय पर होने वाली सेमिनार में, आप सादर आमंत्रित हैं. सेमिनार के लिए प्रस्तावित दस्तावेज़ एवं 'क्रांतिकारी मज़दूर मोर्चा' का संविधान तथा राजनीतिक कार्यक्रम जल्द ही उपलब्ध कराए जाएँगे. फ़ासीवाद का एक इलाज - इंक़लाब जिंदाबाद कार्यक्रम सोमवार, 2 अक्तूबर सेमिनार 'गहराता फ़ासीवादी अँधेरा और हमारा फ़र्ज़' सुबह 10 बजे से 2 बजे; सावित्रीबाई फुले-फ़ातिमा शेख स्मारक मज़दूर पुस्तकालय का उद्घाटन 2 बजे. भोजन विराम 2 से 3; सम्मलेन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम 3 से 6

**स्थान सामुदायिक केंद्र, आज़ाद नगर, मुजेसर थाने के पास, सेक्टर 24 फ़रीदाबाद**

**नरेश 9868483444, सत्यवीर 8383841789, मुकेश- 8882018010, अशोक 9560206651, रजनीश 9718235695, सुभाष- 981506321, विनोद 8287672631, सीमा 9555639868, रिम्पी-8882070904, भूपेन्द्र 9540800437, सोमेश 8744991436, प्रदीप 9873889754**